(4) विकास

Page No:

Date /

विकास → सा० विकास, विकास की अवधारणा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है विकास एक सतत एवं परिवर्तन की प्रक्रिया है विकास सा० संरचना के प्रत्येक पहलू में होता है चाहे वह सा० हो या आर्थिक धार्मिक हो या सांस्कृतिक सा० विकास संरचना के सा० पक्ष से सम्बन्धित है।

सा० विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ →

यद्यपि डब्लू० ई० मूर की पुस्तक Social change और पारसन्स Structure and Processes in Moder Society जैसे समाजशास्त्रियों ने भी अपनी कृतियों में सा० विकास की अवधारणा का उल्लेख किया है किन्तु सा० विकास पर सबसे महत्वपूर्ण विचार एल० टी० हाबहाउस Social development के है हाबहाउस ने सा० विकास का अर्थ मानव मानसिक के विकास से लगाया है जिससे मानव का मानसिक विकास होता है और अन्ततः सा० विकास होता है।

(i) हाबहाउस के अनुसार — "विकास से मेरा अभिप्राय किसी भी प्रकार की प्रगति से है जिससे की मानव सम्बन्धित है।"

(ii) वार्ड के अनुसार — "समाज में रहने वाले व्यक्तियों के जीवन स्तर में वृद्धि ही सा० विकास है।"

(iii) किम के अनुसार — "सा० विकास का उद्देश्य उद्देश्य को प्राप्त करने से है जिसमें समाज के अभाव एवं अकेलेपन का जीवन व्यतीत कर रहे अधिकांश व्यक्ति उपलब्ध सा० संसाधनों में से अपने हिस्से की माँग कर सके।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सा॰ विकास की विशेषताएँ

(1) सा॰ विकास के अन्तर्गत समाज के सभी वर्गों को समानता के स्तर पर लाने का प्रयत्न किया जाता है।
(2) सा॰ विकास मानव जीवन के सभी पहलुओं में सुधार से सम्बन्धित है।
(3) इसमें परिवर्तन समाज में हो रही प्रगति के अनुरूप होता है।
(4) समाज में श्रम-विभाजन में वृद्धि हो जाती है।
(5) सा॰ मूल्यों एवं आदर्शों में परिवर्तन आ जाता है यह परिवर्तन इनके प्रभाव में कमी के रूप में होता है।
(6) सा॰ विकास के लिए सार्थक नीति नियोजन की आवश्यकता पड़ती है।
(7) समाज में सहयोग की भावना में तीव्र वृद्धि होने लगती है।
(8) सा॰ गतिशीलता में वृद्धि होने लगती है अर्थात सा॰ व्यवस्था में जन्मजात योग्यता के स्थान पर मनुष्य को उसके कार्य कौशल के आधार पर पहचाना जाता है।

सा॰ विकास के आयाम

(1) आम जनता की रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मौलिक आवश्यकताओं की समुचित पूर्ति।
(2) शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के उत्तम स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक आहार, प्रदूषण रहित वातावरण, चिकित्सा आदि की पर्याप्त सुविधाएँ।
(3) रोजगार के पर्याप्त अवसर तथा रहन-सहन का उच्च स्तर योग्यता व कार्यकुशलता के आधार पर न कि जाति, प्रजाति, धर्म या

Page No:

Date / /

सम्प्रदाय के आधार पर।

(4) बिजली, परिवहन पानी, परिवहन और संचार जैसी बुनियादी सुविधाएं सबके लिए सुलभ होना।

(5) समाज के पिछड़े व शोषित वर्गों किसानों महिलाओं बच्चों, वृद्धों व विकलांगों के विकास के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होना।

(6) विभिन्न आर्थिक, सा० तथा राजनीतिक विषमताओं को दूर करना तथा समाज में समता लाते हुए सा० बदलाव सम्भव हो सके।

सा० विकास के सूचक :-

(1) जन्म व मृत्यु दर।

(2) साक्षात्कारकता।

(3) कमजोर वर्गों को संरक्षण।

(4) पीने का पानी।

(5) विकास के आर्थिक मापदण्ड। :-

(i) प्रति व्यक्ति आय।

(ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद।

(iii) लोगों का जीवन स्तर।

(iv) औद्योगिक तकनीकी प्रगति।

विकास का आर्थिक मापदण्ड यह दर्शाता है जो देश अपनी जनता के लिए रोटी-रोटी की पर्याप्त सुविधाएं नहीं जुटा पाते उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, पर्याप्त वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर पाते ऊंचा नहीं उठा पाते एवं इन सबके लिए आवश्यक तकनीकी व औद्योगिक नहीं ला पाते उन्हें अल्पविकसित देश माना जाए और जो देश इन चारों मामलों में जरूरत से ज्यादा सुविधाएं अपनी जनता के लिए जुटा पाने में सक्षम होते हैं उन्हें अति विकसित देश माना जाए

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

... प्रदान किया जाना चाहिए तथा दुर्लभ कौशल के विकास पर विशेष बल देना चाहिए। इतना ही नहीं, मानव संसाधन विकास के लिए आवश्यक है कि देश में सभी को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं पर विनियोग किया जाए। यदि लोगों को खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने तथा रहने-सहने की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होंगी तो वे अपनी समस्त शक्ति विकास हेतु नहीं लगा सकते। इसलिए आवश्यक है कि पर्याप्त भोजन एवं पीने के स्वच्छ पानी के साथ-साथ अन्य आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिसमें रहन-सहन की दशाओं पर समुचित ध्यान रखा जाना चाहिए तथा बस्तियों के निर्माण एवं सफाई पर विनियोग किया जाना चाहिए।

(III) सामाजिक विकास
(Social Development)

सामाजिक विकास सामाजिक परिवर्तन का एक ऐसा स्वरूप है जिसमें उन्नत दिशा की ओर विभेदीकरण होता है और संगठनों के स्तर, कुशलता, स्वतन्त्रता तथा पारस्परिकता में वृद्धि होती है। विकास एक प्रकार से उन्नत दिशा (प्रगति) की ओर होने वाला परिवर्तन है। **पानसियम** (Ponsioen) के शब्दों में, "विकास सामाजिक परिवर्तन से समुचित अर्थ वाला शब्द है। यह वृद्धि से सम्बन्धित है जो पहले से ही किसी वस्तु में गुप्तावस्था में विद्यमान होती है।"[1] **हेज** (Hayes) के अनुसार, "सामाजिक विकास का अभिप्राय जीवन के प्रति अच्छे दृष्टिकोण का विकास, आन्तरिक चेतना के विकास तथा समाज के सदस्यों द्वारा किन्हीं आधारभूत नैतिक सिद्धान्तों को स्वीकार करना है।"[2] इसी भाँति, **जिन्सबर्ग** (Ginsberg) का कहना है कि, "समुदायों का विकास अपने सदस्यों की सामान्य आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए होता है।"[3]

सामाजिक विकास की अवधारणा को **कॉम्ट** (Comte), **स्पेन्सर** (Spencer), **मार्क्स** (Marx) तथा **मूल्लर-लेयर** (Muller-Lyer) ने अपनी रचनाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। मार्क्स के अनुसार विकास निरन्तर होने वाली आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया होने के कारण परिवर्तन का समरैखिक स्वरूप है। इसके परिणामस्वरूप पदार्थों, वस्तुओं तथा संगठनों में निम्न स्तर से उच्च स्तर की तरफ वृद्धि होती है तथा विरोधाभास समाप्त हो जाते हैं। राजनीतिक विकास को आर्थिक विकास से पृथक् नहीं किया जा सकता तथा इनके अनुसार सामाजिक, राजनीतिक संरचनाएँ, उत्पादन के साधनों के स्वरूप तथा वर्ग संघर्ष सामाजिक विकास की प्रक्रिया में तेजी ला सकते हैं या इसे धीमी कर सकते हैं।

सामाजिक विकास आर्थिक विकास का प्रमुख द्योतक है। सामाजिक विकास शब्द का प्रयोग व्यक्ति के विकास तथा समाज के विकास दोनों के लिए किया जाता है। व्यक्ति के विकास की दृष्टि से यह वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति में जन्म से अन्तर्निहित मूलप्रवृत्तियों को विकसित करने में सहायता

---

1. "Development has a more narrow meaning than social change. It designates the growth or the unfolding of energies and potentialities already latently present."
—Ponsioen, **Natioanl Development**, p. 12.

2. E. C. Hayes, **Introduction to the Study of Sociology**, p. 283.

3. Morris Ginsberg, **The Idea of Progress**, p. 55.

Scanned with CamScanner

देती है। व्यक्ति अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास अन्य व्यक्तियों के सहयोग से करता है। जब बालक की रुचियाँ, भावनाएँ तथा उसके विचार परिपक्व होने लगते हैं और दूसरे से समाजीकरण द्वारा सामाजिक सीख प्राप्त कर लेता है तो उसका सामाजिक विकास होता है। समाज के स्तर पर सामाजिक विकास समाज के सभी अंगों के समुचित विकास से है जिससे समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों का जीवन स्तर ऊँचा बना रहता है। कतिपय विद्वान् यह मानते हैं कि केवल आर्थिक विकास कर लेने से ही आम जनता के जीवन को खुशहाल नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए सामाजिक जीवन के सभी पक्षों का समुचित तथा सन्तुलित विकास आवश्यक है। सामाजिक विकास को **टी० बी० बॉटोमोर** (T. B. Bottomore) ने इस प्रकार परिभाषित किया है, "सामाजिक विकास से हमारा तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें समाज के व्यक्तियों में ज्ञान की वृद्धि हो और व्यक्ति प्रौद्योगिक आविष्कारों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लें तथा साथ ही साथ वे आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो जाएँ।" सामाजिक विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत औद्योगीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप आर्थिक व राजनीतिक संगठनों की कार्यक्षमता में वृद्धि हुई है तथा इसके आधार पर समाजों को **विकसित** (Developed) तथा **अविकसित** (Under-developed) या **विकासशील** (Developing) जैसी श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

सामाजिक विकास का अभिप्राय जैवकीय विकास न होकर मानवीय ज्ञान में वृद्धि तथा प्राकृतिक पर्यावरण पर मानवीय नियन्त्रण में अधिकाधिक वृद्धि है। मानवीय ज्ञान में वृद्धि की दृष्टि से अगर समाज में व्यक्ति अपने पूर्वजों की अपेक्षा ज्ञान में अभिवृद्धि कर चुके हैं तो उसे हम विकसित समाज कह सकते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण पर मानवीय नियन्त्रण की वृद्धि भी विकास का एक सूचक है तथा जिन समाजों ने इस नियन्त्रण में सफलता प्राप्त कर ली है वे विकसित समाज हैं। वास्तव में, सामाजिक विकास को केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित करना उचित नहीं है। विकासशील देशों के लिए 'सामाजिक विकास' एक बहु-आयामी अवधारणा है।

(IV) संपोषित या सतत विकास
(Sustainable Development)

आज सम्पूर्ण विश्व में 'संपोषित विकास' पर विशेष बल दिया जा रहा है। यह विकास की वह प्रक्रिया है जिसे कोई भी देश अपने संसाधनों द्वारा दीर्घकालीन अवधि तक बनाए रख सकता है। इस प्रकार के विकास द्वारा वर्तमान की आवश्यकताएँ तो पूरी होती ही हैं, साथ ही भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के प्रति जवाबदेही भी निश्चित की जाती है। इसका अर्थ ऐसा विकास है जो न केवल मानव समाज की तत्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है अपितु स्थायी तौर पर भविष्य के लिए भी निर्बाध विकास का आधार प्रस्तुत करता है। संपोषित विकास की धारणा सर्वप्रथम 1987 ई० में ब्रटलैण्ड प्रतिवेदन में सम्मिलित की गई जिसमें इस तथ्य पर जोर दिया गया कि आर्थिक विकास की ऐसी पद्धति बनाई जानी चाहिए जिससे भावी पीढ़ियों के विकास पर किसी प्रकार की आँच न आए। इस प्रकार का संरक्षण सकारात्मक प्रकृति का होता है जिसके अन्तर्गत पारिस्थितिकीय तन्त्र के तत्त्वों का संचय, रखरखाव, पुनर्स्थापन, दीर्घावधिक उपयोग एवं अभिवृद्धि सभी समाहित होती है।

संपोषित विकास की धारणा विकास को केवल आर्थिक एवं औद्योगीकरण के पहलू से ही नहीं देखती अपितु इसमें उसके सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं पर भी समुचित विचार किया जाता है। आर्थिक विकास के साथ-साथ मानव के जीवन-स्तर में गुणात्मक सुधार बनाए-रखना संपोषित विकास का प्रमुख लक्ष्य है। विकास के विश्लेषण का यह परिप्रेक्ष्य समग्र विकास पर बल देता है। संपोषित विकास एक बहुमुखी धारणा है जिसमें समानता, सामाजिक सहभागिता, पर्यावरण संरक्षण की क्षमता,

Scanned with CamScanner

विकेन्द्रीकरण, आत्म-निर्भरता, मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है। संपोषित विकास हेतु आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, वस्त्र और आवास के साथ-साथ बिजली, पानी, परिवहन एवं संचार जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हों। इसके साथ ही मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा हो तथा उसे काम करने हेतु प्रदूषण रहित पर्यावरण, पोषित आहार तथा चिकित्सा सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकें। संपोषित विकास जनसाधारण को आर्थिक गतिविधियों में रोजगार के अवसर प्रदान करने पर बल देता है ताकि उनका जीवन-स्तर ऊँचा हो सके।

संपोषित विकास का लक्ष्य आर्थिक विकास, सामाजिक समानता एवं न्याय तथा पर्यावरण संरक्षण में वृद्धि करना है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संपोषित विकास का लक्ष्य आर्थिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक आवश्यकताओं में सन्तुलन बनाए रखना है ताकि वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके निम्नलिखित चार लक्षण हैं—

(1) सामाजिक प्रगति एवं समानता (Social progress and equality),

(2) पर्यावरणीय संरक्षण (Environmental protection),

(3) प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण (Conservation of natural resources), तथा

(4) स्थायी आर्थिक वृद्धि (Stable economic growth)।

संपोषित विकास एक ऐसा दीर्घकालीन एवं समाकलित परिप्रेक्ष्य है जो स्वस्थ समुदाय के विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु आर्थिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक मुद्दों की ओर संयुक्त रूप से ध्यान देता है तथा सम्पूर्ण प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपभोग से बचने का प्रयास करता है। इस प्रकार का विकास हमें अपने प्राकृतिक स्रोतों को बचाने एवं उनमें वृद्धि करने की प्रेरणा देता है। संपोषित विकास की धारणा को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। सभी जानते हैं कि भूमि के नीचे पानी का स्तर निम्न होता जा रहा है एवं पानी की मात्रा कम होती जा रही है। आने वाले दशकों में पानी की मात्रा इतनी कम हो जाएगी कि इसके लिए भी संघर्ष होने लगेगा। यदि कोई देश संपोषित विकास द्वारा इस समस्या का हल करना चाहता है तो उसे न केवल पानी का उपभोग कम करना होगा अपितु इसमें वृद्धि के उपाय भी खोजने होंगे। इसी भाँति, औद्योगिक विकास के समय पर्यावरणीय संरक्षण एवं सन्तुलन का ध्यान रखना होगा। निर्धनता एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर परस्पर जुड़े हुए हैं। इसके समाधान हेतु ऐसी योजना बनाने की आवश्यकता है कि रोगों की रोकथाम हेतु प्रभावी उपाय किए जाएँ तथा साथ ही निर्धनता उन्मूलन के कार्यक्रम लागू किए जाएँ।

Scanned with CamScanner